REVIEW OF RESEARCH

स्त्री-पुरूष प्रेम और विवाह: गांधी व टॉलस्टॉय के विचार

प्रीतिमाला सिंह

शोधार्थी-स्त्री अध्ययन विभाग, म.गां.अं.हिं.वि. वर्धा (महाराष्ट्र)

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

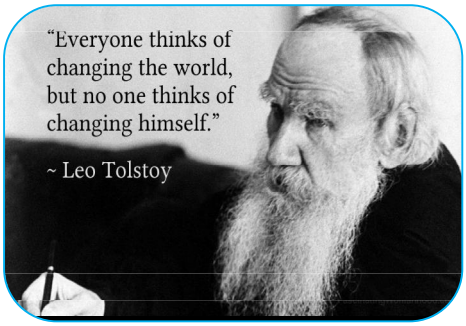

सारांश :

किसी भी समाज के बदलाव के महत्वपूर्ण कारक आर्थिक-राजनीतिक के साथ स्त्री-पुरूष संबंध का आधार और उसकी प्रकृति भी रही है। स्त्री-पुरूष का संबंध समाज के विकास की मुख्य धुरी है। दोनों के स्वस्थ संबंधसे ही समाज की अनेक समस्याओं को दूर किया जा सकता है। संबंध की बेहतरी दोनों की बीच प्रेम के कारण ही संभव है इसलिए महात्मा **गांधी** और लियो **टॉलस्टॉय** जो दोनों एक-दूसरे के पूरक होने के साथ प्रभावित भी थे। दोनों ने स्त्री-पुरूष प्रेम संबंध की मजबूती के लिए उच्च विचार दिए। जिसे आम-जन अपनाकर अपने जीवन को बेहतर राह दिखा सके।

Keyword- प्रेम, स्त्री-पुरूष संबंध, विवाह, समाज, विचार।

रूस के महान साहित्यकार **लियो टॉलस्टॉय** के ब्रम्हाचर्य, संयम, अहिंसा और स्वतंत्रता के विचारों ने मोहनदास करमचंद गांधी को प्रभावित किया। **टॉलस्टॉय** की किताब **'पुनरुत्थान'** से गांधी को महात्मा बनने की राह मिली। महात्मा गांधी के सर्वधर्म समभाव, संपत्ति के प्रति अनासक्ति और भारतीय आंदोलन में सत्याग्रह अहिंसा को अपने जीवन का मुख्य आधार बनाने का विचार टॉलस्टॉय के विचारों से ही प्रेरित था। टॉलस्टॉय व महात्मा गांधी दोनों द्वारा मानवता, शांति व अहिंसा का जो विचार दिया गया, वह पूरी दुनिया और मानवता के में एक मिसाल बन गई। **टॉलस्टॉय** और गांधी दोनों की आपसी मुलाकात कभी नहीं हुई लेकिन पत्रों के माध्यम से दोनों के विचारों का आदान-प्रदान विचारधारा में समानता होने के कारण ही संभव थाने। टॉलस्टॉय अपनी पाश्चात्य पृष्ठभूमि के आधार पर संयम और प्रेम का विचार दिया तो वहीं महात्मा गांधी ने भारत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार आम-जन को उचित मार्गदर्शन देने का प्रयास किया। प्रेम को दोनों ही मनुष्य जीवन का सर्वोच्च अंग मानते थे। इसलिए अपने जीवन के अंतिम दिनों में टॉलस्टॉय ने गांधी को एक चिट्ठी लिखी; *'प्रेम ही इंसान के जीवन का सर्वोच्च नियम है इसी प्रेम को तो दुनिया के सभी धर्मों के ज्ञानियों ने समझाया, इस प्रेम में बल कभी नहीं मिलना चाहिए नहीं तो वह हिंसा का रूप धारण कर लेता है।'*[1] गांधी व टॉलस्टॉय दोनों ने अपना संपूर्णजीवन मानव जीवन को उचित मार्गदर्शन देने के लिए समर्पित किया और अपने विचारों से उनके जीवन में उत्पन्न समस्याओं को भी सुलझाने का काम किया। प्रेम को दोनों मानवता का महत्वपूर्ण आधार मानते थे इसलिए स्त्री-पुरुष संबंध व प्रेम को भी समझने व उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने का विचार दिया। टॉलस्टॉय प्रेम को दो भाग- अध्यात्मिक व शारीरिक रूप में बांटकर व्यक्ति को अपने हिसाब से अपना लेने को कहते हैं। ब्रह्मचर्य और पवित्रता के विचार को दोनों सर्वोच्च स्थिति मानते हैं। इसलिए अपने विचार के शुरुआती दिनों में स्त्री-पुरुष प्रेम संबंधों के प्रति उनकी असहमति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। लेकिन दोनों ही सामाजिक परिवेश और समयनुसार बदलाव की जरूरत को भली-भाँति महसूस करते थे इसलिए स्वयं पर प्रयोग के द्धारा अनुभवों के आधार पर समय-समय पर मनुष्य जीवन की बेहतरी के लिए अपने विचारों में परिवर्तन किया तथा स्त्री-पुरुष संबंधोंपर असहमति दर्ज करने के बाद संबंधों में सुधार, समानता व प्रेम को बनाए रखने के लिए आम-जन को प्रेरित किया।

टॉलस्टॉय प्रेम को काम से सर्वोच्च स्थान देते हैं। शुरुआत में टॉलस्टॉय पुरुष द्वारा प्रेम प्राप्ति के लिए स्त्री की तलाश करने व स्त्री द्वारा पुरुष प्रेम प्राप्त करने के लिए लुभाने में अपना समय बर्बाद करने के आधार पर प्रेम की आलोचना करते हैं। वह विवाह पूर्व प्रेम को अनुचित बताते हैं, लेकिन विवाह में प्रेम ना होने की

स्थिति को भी खराब मानते हैं। महात्मा गांधी व टॉलस्टॉय दोनों ने सर्वप्रथम स्त्री-पुरुष को प्रलोभन से बचने के लिए संयम व पवित्रता का विचार दिया। जिसके बाद दोनों समाज के सेवा योग्य बन सके। टॉलस्टॉय द्वारा दिया गया प्रेम का विचार महत्वपूर्ण है। जिसमें वह प्रेम को काम भावना समझने की भूल बताते हुए कहते हैं; *"यदि प्रेम को हम अच्छी तरह समझना चाहते हैं तो हमें उसमें से उन तमाम बाहरी बातों को निकाल डालना चाहिए जो आध्यात्मिक हो, तभी हम उसके शुद्ध व यथार्थ रूप को पहचान सकेंगे।"*[2]

प्रेम प्राकृतिक व स्वतंत्र प्रक्रिया होती है। जिसे काम से जोड़कर व्याख्यायित करने की भूल वर्तमान समय में भी जारी है। जबकि प्रेम व काम दोनों स्त्री-पुरुष संबंधों में एक दूसरे के पूरक होते हुए भी अलग-अलग पहचान रखते हैं। जिसे समान समझना मानव भावनाओं को ना समझ पाने का परिणाम है। जाति, धर्म व सांस्कृतिक विविधताओं वाले देश भारत में स्त्री-पुरुष प्रेम और प्रेम की स्थिति को समझना, सामाजिक वर्जनाओं से उत्पन्न समस्याओं का समाधान महात्मा गांधी के लिए सरल नहीं रहा। सर्वधर्म समभाव व अहिंसा के विचारों के कारण ही वह आम-जन के कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान सरलता से कर लेते थे, यह उनके उच्च विचारों का ही परिणाम है। एक बार वह आर्थिक रूप से कमजोर पिता के सामने बेटी के विवाह खर्च और दहेज की समस्या से चिन्तित होने के बाद समाधान बताते हुए गाँधी दहेज देने की व्यवस्था से असहमति दर्ज करते हुए कहते हैं; *"ऐसा वर चुने अथवा लड़की को चुनने का अवसर दें जो उससे रुपए के लिए नहीं, वर प्रेम के लिए विवाह करेगा।"*[3] इस संबंध में वह यह भी कहते हैं कि विवाह के लिए जाति- धर्म का जो सीमित दायरा है उसे बढ़ाना चाहिए।

भारतीय संस्कृति में जाति-धर्म व्यवस्था मजबूती से अपनी जडे जमायी हुई है। अतः जात-धर्म के बंधन से बाहर जाकर विवाह संबंधके बारे में विचार करना भी आम-जन के लिए बड़ी और मुश्किल सी बात है। जाति-धर्म की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए विवाहपूर्व स्त्री-पुरुष संबंध और प्रेम का विरोध करते हुए उसे दंडित व नियंत्रित करने का कार्य सदियों से किया जाता रहा है। जिसके कारण समान जाति में विवाह व्यवस्था उचित वर के दायरे को सीमित कर देता है और दहेज जैसी समस्याएं एक गंभीर समस्या के रूप में उभर कर आती हैं। जो स्त्री-पुरूष के बीच स्वस्थ संबंधनहीं पनपने देती और मानवता के लिए भी घातक सिद्ध होती है।महात्मा गांधी संबंधोंमें जाति-धर्म के सीमित दायरे को बढ़ाते हुए स्त्री को अपना वर चुनने के लिए स्वतंत्रता व शिक्षा देने की जगह प्रदान करने का सुझाव देते हैं। दूसरी तरफ, टॉलस्टॉय पुरुष श्रेष्ठता के भाव को समझते हुए उन पुरुषों की आलोचना करते हैं, जो पवित्रता भंग होने का कारण स्त्री को ठहराते हैं। पुरुष द्वारा दिए इस विचार को स्त्री जाति का अपमान मानते हुए, वह पुरुष द्धारा प्रचारित इस बात का कि पुरूष का प्रेम स्त्री की रक्षा करता है का भी खंडन करते हैं। पुरूष प्रेम में स्त्री को दया पात्र बना देने की स्थिति को वह अनुचित बताते हैं। टॉलस्टॉय पवित्रता का विचार देते हुए प्रेम को हानिकारक नहीं बताते, बल्कि वह सच्चे प्रेम को रखने के लिए उपाय बताते हुए, दिल को पीड़ा, आकांक्षा और चिंता को स्वार्थ कलंकित प्रेम कहते हैं। **एरिक फ्रॉम** द्वारा प्रस्तुत प्रेम को कला मानने के विचार के पूर्व ही टॉलस्टॉय ने प्रेम को कला बता कर उसे सीखने पर जोर दिया। प्रेम कला को सीखने के लिए वह व्यक्ति को शांति और नम्रता धारण करने का सुझाव देने के साथ, अपेक्षाओं से दूर रहने की सलाह देते हैं। क्योंकि अपेक्षाओं की अपूर्णता व्यक्ति को तकलीफ देती है। वहीं महात्मा गांधी प्रेम की जातीय-धार्मिक संरचना को समझते भारत में व्याप्त सभी भेद-भावों को दूर करने की सलाह देते हैं। जातीय-धार्मिक व्यवस्था के कारण प्रेम और स्त्री-पुरुष संबंधके दायरे को सीमित कर देने के साथ खान-पान और विवाह संबंधको वर्जित बना देने की व्यवस्था को अस्वीकार करते हुए कहते हैं *"यदि भारत एक और अखंड है तो निश्चय ही उसमें ऐसे कृत्रिम विभाग नहीं रहने चाहिए जिससे अनगिनत छोटे-छोटे दल उपजते हैं जो आपस में खान-पान का तथा शादी ब्याह का संबंध नहीं रखते।"*[4] टॉलस्टॉय व गांधी दोनों स्त्री-पुरुष के लिए संयम और ब्रह्मचर्य का विचार देते हैं, लेकिन संबंधोंमें आकर्षण व प्रेम की स्थिति उत्पन्न होने पर उसे बेहतर संबंधबनाने के लिए भी सुझाव देते हैं। संबंधोंमें समानता के माध्यम से ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। टॉलस्टॉय का मानना है कि विवाह के पूर्व स्त्री-पुरुष दोनों में साधर्म होना चाहिए, बिना इसके वह उनका मिलना मुश्किल और संबंधोंमें दूरी का मुख्य कारण बनता है। स्त्री द्वारा साथी चयन के सीमित दायरा को बढ़ाने का विचार देने के बाद गांधी के सामने वर्ण व्यवस्था की समस्या संबंधी सवालों के पत्र आए जैसे- जाति- धर्म के बाहर जाकर विवाह करने वाली स्त्री किस धर्म या जाति की कहलाएगी? क्या वह पति के वर्ण में शामिल होगी? या दोनों अपने-अपने वर्ग के साथ दृढ़ रहेंगे तब दोनों के संतान किस वर्ण की होगी? गांधी ने उत्पन्न सवालों पर समाधान यह कहते हुए दिया- यदि हमें वर्ण की दृष्टि से ही बातचीत करना है, तो आज सबों का चाहे स्त्रियाँ हो, चाहे पुरूष एक ही वर्ण है- हम सब शुद्र हैं[5] क्योंकि गांधी का मानना था कि पति-पत्नी में कोई भेद-भाव नहीं होता, अतः स्त्री स्वाभाविक तौर पर जिस भी धर्म में मिल जाए या धर्म ना मिले, बदले तो इसमें किसी एक धर्म की बदनामी या ठेस पहुंचने की बात नहीं, सभी वर्णों का सामाजिक दर्जा पूरी तरह बराबर होगा तो फिर समस्या नहीं होगी। गांधी स्त्री की स्वतंत्रता व स्वयं की इच्छा से वर ढूंढने और प्रेम को संबंधोंका आधार बनाने के पक्षधर थे। प्रेम-विवाह के निर्णय को धर्म-जाति की झूठी प्रतिष्ठा से ऊपर उठकर सभी को समान मानने

और हिंसा करने, स्त्री को नियंत्रित करने की बजाय उसके प्रेम संबंध व साथी के चयन को स्वीकार करने का विचार देते हैं। टॉलस्टॉय स्त्री को पुरुष के बराबर मानते थे। बस मातृत्व ग्रहण करने की स्थिति दोनों के बीच श्रम का बंटवारा करती इसलिए वह मातृत्व को स्त्री की ताकत खींच लेने का कारण मानते हैं। वह विवाह संबंधोंमें भी स्वाभाविक प्रेम को बनाए रखने के लिए संबंधोंबराबरी का व्यवहार करने की सलाह देते हुए कहते हैं कि *"अपने वैवाहिक प्रेम को पारस्परिक और स्वाभाविक प्रेम पर कभी प्रभुत्व न जताने देना, दोनों एक दूसरे के मनुष्योचित अधिकारों का खूब ख्याल करना।"* [6] टॉलस्टॉय स्त्री-पुरुष प्रेममय जीवन के माध्यम से संसार में प्रेम व सत्य का प्रचार करने का विचार देते हैं। वहीं जाति-धर्म की बंदिशों के कारण प्रेम और स्त्री-पुरुष संबंधों की सीमितता को 1933-35 के दौर में अपने तर्कपूर्ण विचारों द्वारा भारतीय जन के मन में उत्पन्न सवालों का सुलझाने का प्रयत्न कर रहे गांधी के सामने पुन: दस बाद फिरोज और इंदिरा की सगाई के खबर फैलने से वही सवाल व समस्याएँ तेजी से उभर कर सामने आने लगी। इस समस्या का जवाब देते हुए गांधीजी पुनः स्त्री-पुरुष संबंध व स्वतंत्र प्रेम को जाति, धर्म, वर्ग की बेड़ियों और वर्जनाओं की विचारधारा से ऊपर उठकर मानव जीवन के सकारात्मक विकास को जीवन महत्ता प्रदान करने का विचार देते हुए लिखा; *"मैं हमेशा से इस बात का घोर विरोधी रहा हूं और अब भी हूं कि स्त्री-पुरुष सिर्फ विवाह के लिए अपना धर्म बदले, धर्म कोई चादर या दुपट्टा नहीं है कि जब चाहा ओढ़ लिया जब चाहा उतार दिया इस मामले में धर्म बदलने की कोई बात नहीं है।"*[7] गांधी स्त्री-पुरूष प्रेम संबंध के बीच जाति-धर्म आदि दिवारों को भारत के विकास में अवरोध मानते थे। और सिर्फ जातीय-धार्मिक प्रतिष्ठा के लिए व्यक्ति दूसरे की इच्छाओं और संबंधों का निर्धारण करे इसे किसी स्वस्थ समाज के लिए बेहतर स्थिति नहीं मानते थे। टॉलस्टॉय प्रेम और संबंधोंमें बराबरी की समस्याओं का समाधान सत्य एवं संयम के प्रयोग द्वारा कर रहे थे। वही भारत की सांस्कृतिक विविधता स्त्री-पुरुष प्रेम संबंधों की अनेक समस्याओं को सामने लाने का कारण बन रहा था। टॉलस्टॉय और गांधी ब्रह्मचर्य, संयम और अहिंसा को सर्वोच्च गुण बताते हैं, लेकिन स्त्री पुरुष मिलन का प्रमुख कारण विश्वास व प्रेम को मानते हैं। टॉलस्टॉय व महात्मा गांधी दोनों ने हिंसा का विरोध किया और प्रेम को मानव जीवन में जगह देने की बात की। सर्वधर्म समभाव की विचारधारा वर्तमान दौर में स्त्री-पुरुष प्रेम में उत्पन्न समस्या को सुलझाने का बेहतरीन माध्यम है। गांधी इस तथ्य को मानते थे कि भारत में जाति-धर्म की वर्जना का टूटना आसान नहीं है लेकिन वह भविष्य में इसमें सकारात्मक परिर्वतन के रूप में देखते थे। उनका कहना है; *"जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, इस तरह के विचार बढ़ेंगे और उनसे समाज को फायदा ही होगा, फिलहाल तो हममें आपसी सहिष्णुता का माद्दा भी पैदा नहीं हुआ है लेकिन जब सहिष्णुता बढ़कर सर्वधर्म-समभाव में बदल जाएगी तो ऐसे विवाहों का स्वागत किया जाएगा। आने वाले समाज की नवरचना में जो धर्म संकुचित रहेगा और बुद्धि की कसौटी पर खरा नहीं उतरेगा, वह टिक न सकेगा, क्योंकि उस समाज में मूल्य बदल जाएंगे, मनुष्य की कीमत उसके चरित्र के कारण होगी, धन पट्टी या कुल के कारण नहीं।"*[8] महात्मा गांधी प्रेम विवाह के सीमित दायरों को बढ़ाने, जाति धर्म कोई स्त्री-पुरुष संबंधोंका आधार मानने की व्यवस्था में परिवर्तन व इस परिवर्तन को सभी व्यक्तियों में बराबरी का आधार मानते हुए भविष्य में सकारात्मक परिवर्तन की अनेक संभावनाओं की तलाश कर रहे थे। गांधीवाद व टॉलस्टॉय दोनों अहिंसा के पुजारी थे। प्रेम को मनुष्यता का प्रमुख आधार मानते थे। प्रेम सदियों से इन मानवीय संबंधोंसृष्टि की रचना का आधार रहा है। स्त्री-पुरुष प्रेम की स्वीकार्यता से हिंसा, गैरबराबरी को समाप्त कर समानता का समाज बनाया जा सकता है। स्त्री-पुरुष के साथ ही चयन, प्रेम संबंधका विरोध तथा हिंसा किसी भी समाज को पतन की ओर अग्रसर कर सकता है। जहां मनुष्यता की कद्र होने की बजाय नफरत, हिंसा और भय स्थान ग्रहण करेगा। लेकिन प्रेम की स्वीकार्यता से समाज में परिवर्तन की संभावना है, जो समानता व मानवता पर आधारित होगा।

निष्कर्ष

मनुष्य जीवन के विकास की पहली अवस्था से ही प्रेम जीवन और सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का मुख्य आधार रहा है। बिना प्रेम के ना स्त्री-पुरूष सामंजस्य की कल्पना की जा सकती है ना ही समाज में सहिष्णुता और अपनत्व की जिसके पक्षधर महात्मा गांधी व लियो टॉलस्टॉय थे। क्योंकि दोनों ने अपने जीवन के तमाम अनुभवों व उच्च विचारों से यह सीख लिया कि प्रेम ही मनुष्यता का आधार है इसलिए समाज के विकास, शांति व सौहार्द के लिए संबंधों में प्रेम का होना आवश्यक है। स्त्री-पुरूष प्रेम संबंध की समाज में स्वतंत्रता, स्वीकार्यता व सहमति से अनके बुराईयों, भेदभावों को मिटाया जा सकता है। लेकिन वर्तमान समय में संबंधों में परिवर्तन के कारण उत्पन्न अनेक समस्याओं और सवालों से जूझ रहा आम-जन और स्त्री-पुरूष को राह दिखाने के लिए गांधी और टॉलस्टॉय का विचार को समझने की नितान्त आवश्यकता है।

[1] हरिवंश, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 150 साल: गांधी के अंतिम दिन नोआखली की अंधेरी सुरंग, नवंबर 9,2018, ps://prabhatkhabar.com.

[2] टॉलस्टाय लिओ, अनु-ज्ञानचंद, स्त्री और पुरूष, पृष्ठ सं-18

[3] गांधी महात्मा,**स्त्रियों की समस्याएं(स्त्रियों के विविध प्रश्नों का विवेचन और समाधान), पृष्ठ सं-44-45**

[4] गांधी महात्मा,**स्त्रियों की समस्याएं(स्त्रियों के विविध प्रश्नों का विवेचन और समाधान), पृष्ठ सं-45**

[5] गांधी महात्मा,**स्त्रियों की समस्याएं(स्त्रियों के विविध प्रश्नों का विवेचन और समाधान), पृष्ठ सं-50**

[6] टॉलस्टाय लिओ, अनु-ज्ञानचंद, स्त्री और पुरूष, पृष्ठ सं-104

[7] हिन्दू-मुस्लिम विवाह पर गांधी क्या सोचते थे? 6 फरवरी 2018, Satyagrah.scroll.in

[8] हिन्दू-मुस्लिम विवाह पर गांधी क्या सोचते थे? 6 फरवरी 2018, Satyagrah.scroll.in

LBP PUBLICATION